Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-138-141

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 138-141
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ. ऋषिकेश श्रीवास्तव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक,
जवाहर नवोदय विद्यालय,
नवादा, बिहार.

Corresponding Author :

डॉ. ऋषिकेश श्रीवास्तव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक,
जवाहर नवोदय विद्यालय,
नवादा, बिहार.

भ्रष्टाचार और यशपाल

सार- भ्रष्टाचार के भोगी समाज में कमोबेश सभी कभी-न कभी रहे हैं। अत्याचार और अनाचार के जड़ में भ्रष्टाचार ही है। भ्रष्टाचार एक ज्वलंत समस्या है जो प्रायः प्रत्येक देश-समाज में व्याप्त है। सार्वजनिक जीवन में स्वीकृत मूल्यों के विरुद्ध आचरण को भ्रष्ट आचरण समझा जाता है (भ्रष्टाचार = भ्रष्ट + आचार)। भ्रष्टाचार को आर्थिक अपराधों से जोड़ कर देखा जा सकता है। सरकारी सत्ता और संसाधनों के निजी फ़ायदे के लिए किया जाने वाला बेवजह उपयोग भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में आएगा। एक दूसरी परिभाषा यह है कि निजी या सार्वजनिक जीवन के किसी भी स्थापित और स्वीकार्य मानक का चोरी-छिपे उल्लंघन भ्रष्टाचार है। यदि हम भ्रष्टाचार को भारत के संदर्भ में देखें तो यह पता करना काफी कठिन है कि इसकी जड़े कितनी गहराई तक फैली हुई है? भारत में भ्रष्टाचार की स्थिति में स्वाधीनता के पहले एवं बाद के दृश्य में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है बल्कि यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार ने मुनाफाखोरी और रिश्वत जैसी समस्याओं के माध्यम से अपनी जड़ को और मजबूत किया है। भ्रष्टाचार का मुद्दा एक ऐसा सामाजिक प्रश्न है जिसका विरोध करना मानवता के लिए आवश्यक है अन्यथा नैतिकता और सामाजिकता की बात कल्पना-सी लगने लगेगी। यशपाल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी दायित्व को पूरा किया है।

बीज-शब्द: भ्रष्टाचार, कमोबेश, अत्याचार, अनाचार, समस्या, ज्वलंत

भ्रष्टाचार वह रोग है जिससे समाज में अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है। अत्याचार और अनाचार के जड़ में भ्रष्टाचार ही है। भ्रष्टाचार एक ज्वलंत समस्या है जो प्रायः प्रत्येक देश-समाज में व्याप्त है। सार्वजनिक जीवन में स्वीकृत मूल्यों के विरुद्ध आचरण को भ्रष्ट आचरण समझा जाता है (भ्रष्टाचार = भ्रष्ट + आचार)। भ्रष्टाचार को आर्थिक अपराधों से जोड़ कर देखा जा सकता है। सरकारी सत्ता और संसाधनों के निजी फ़ायदे के लिए किया जाने वाला बेवजह

उपयोग भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में आएगा। एक दूसरी किन्तु, अधिक व्यापक परिभाषा यह है कि निजी या सार्वजनिक जीवन के किसी भी स्थापित और स्वीकार्य मानक का चोरी-छिपे उल्लंघन भ्रष्टाचार है। यदि हम भ्रष्टाचार को भारत के संदर्भ में देखें तो प्रतीत होता है कि इसकी जड़े गहराई तक फैली हुई है। भारत में भ्रष्टाचार की स्थिति में स्वाधीनता के पहले एवं बाद के दृश्य में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है बल्कि यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार ने मुनाफाखोरी और रिश्वत जैसी समस्याओं के माध्यम से अपनी जड़ो को और मजबूत किया है। भ्रष्टाचार का मुद्दा एक ऐसा सामाजिक प्रश्न है जिसका विरोध करना मानवता के लिए आवश्यक है अन्यथा हमारी सामाजिक व्यवस्था नष्ट हो जायेगी; नैतिकता और सामाजिकता की बात कल्पना-सी लगने लगेगी। यशपाल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी दायित्व का निर्वाह किया है।

साहित्यकार का सम्बंध समाज के व्यापक परिवेश से होता है; वह विराट सार्वभौम सामाजिक परिस्थितियों से संबद्ध होकर लेखन कार्य करता है। श्रेष्ठ साहित्यकारों की निगाहें वर्तमान के साथ-साथ भविष्य पर भी रहती हैं। इस कारण से उसके रचना कर्म में वर्तमान परिस्थितियों के साथ-साथ भविष्य की भी झलक रहती है। यशपाल की कहानियों मे केवल समाज का चित्रण ही नहीं हुआ है अपितु समाज कैसा होना चाहिए इस प्रश्न की ओर भी हमारा ध्यान खींचा है। सामाजिक समस्याओं को रेखांकित कर उसके उन्मूलन का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं में युग बोध है जो उन्हें प्रेमचंद के समीप ला कर खड़ा करता है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के साथ-साथ सामाजिक जीवन की विडम्बनाओं पर तीखा प्रहार किया है, जिसके कारण इनकी रचनाएँ प्रबुद्ध वर्ग को सहज ही आकर्षित करती है। कुरीतियों के प्रति लोगों को जागरूक करना और आडम्बर तथा विडम्बनाओं के प्रति अगाह करना यशपाल के रचना कर्म की मूल प्रेरणा स्रोत है। अतः यशपाल अपनी जड़ को किसी भी रचना में नहीं भूले हैं तथा प्रायः सभी रचनाओं में इन सामाजिक बुराइयों से लोहा लेते नजर आते हैं।

यशपाल ने भ्रष्टाचार के कारणों की तलाश अपनी रचनाओं में की है। महामारी युद्ध प्राकृतिक आपदा आदि भ्रष्टाचार में संलिप्त लोगों के लिए वरदान साबित होते हैं, 'बंगाल के अकाल में बाज़ार में अन्न रहते तीस लाख आदमी अन्न का बढ़ा दिया गया मूल्य न दे सकने के कारण मर गये। अन्न के बिना मरने वाले इन लोगों की लाशों पर मुनाफ़ाखोरों ने प्रति मुर्दा दस हजार रुपया कमाया यह सरकारी आँकड़े बता रहे हैं।'[1] इससे सिद्ध होता है भ्रष्टाचार कितना घातक है। 'चोरबाज़ारी के दाम' कहानी का जगीरीमल केमिस्ट की दुकान चलाता है। वह दवाइयों पर मनचाहे मूल्य वसूल कर रुपये कमाता है "कानून और अमन की छत्रछाया में जगीरीमल...बीमारी से बिलबिलाते लोगों से मनमाने दाम वसूल करता था।"[2] जगीरीमल ग्राहकों के गले पर छुरी रखकर खूब मुनाफ़ा कमाता रहा, लेकिन भारत-पाक विभाजन के कारण उसे रावलपिंडी से विस्थापित होना पड़ता है। शरणार्थी शिविर में मुनाफ़ाखोर जगीरीमल के बेटे कमल की दवाओं के कालाबाजारी के कारण मौत हो जाती है। यशपाल की कहानियों के संदर्भ में यदि किसी भी समस्या की चर्चा की जाये तो उसके मूल में भ्रष्टाचार ही है। मुनाफाखोरी एवं कालाबाजारी की इसी समस्या का यथार्थ चित्रण यशपाल ने 'डॉक्टर' कहानी में किया है।

डॉक्टरी जैसा मानवीय सेवा कार्य भी पूंजीवादी समाज में शोषण का अंग बन गया है, "समाज में डॉक्टर का काम बीमारी दूर करना नहीं, बीमारी से फायदा उठाना है। तुम लोगों का इलाज करना चाहो तो बीमारों की कमी नहीं है परन्तु तुम्हें तो बीमार की जेब से पैसा चाहिए।"[3] इसलिए यशपाल अपने विचारों को चेतन के माध्यम से व्यक्त करते हैं, "पूंजीवादी समाज में व्यवस्था ही ऐसी है कि सब एक दूसरे का शिकार करके जीते हैं।...डॉक्टर बीमारी से परेशान आदमी का शिकार करता है।"[4] जिससे लोगों की आर्थिक स्थिति चरचरा जाती है। आर्थिक समस्या का यथार्थ यशपाल की अनेक कहानियों में मिलता

है। समाज में धन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज में अर्थ की असमानता के कारण व्यक्ति को जीविका यापन के साधन जुटाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी उसको अपनी रोजी-रोटी के लिए दूसरों की रोटी छीननी पड़ती है और इस प्रकार वह भी शोषक बन जाता है। अतः कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार ही सभी समस्याओं के जड़ में है। पूंजीवादी विरोधी नज़रिया रखने वाले विद्वानों की मान्यता है कि बाज़ार आधारित व्यवस्थाएँ 'लालच अच्छा है' के उसूल पर चलती है इसलिए उनके तहत भ्रष्टाचार में बढ़ोतरी होनी लाज़मी है। दूसरी तरफ़ खुले समाज की वकालत करने वाले और मार्क्सवाद विरोधी बुद्धिजीवी सर्वहारा की तानाशाही वाली व्यवस्थाओं में कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकारियों द्वारा बड़े पैमाने पर राज्य के संसाधनों के दुरुपयोग और आम जनता के साधारण जीवन की कीमत पर ख़ुद के लिए आरामतलब ज़िंदगी की गारंटी करने की तरफ़ इशारा करते हैं। यशपाल बताते हैं बाजार भ्रष्टाचार का एक मुख्य केन्द्र है जहां के भ्रष्टाचारी मुनाफाखोर हैं।

'रोटी का मोल' शोषितों की दयनीय स्थिति को चित्रित करता है। सेठ के द्वारा मंगाई गयी पूड़ियों को रामगोपाल इसलिए नहीं खाता क्योंकि उसे अपने भूखे बच्चे की याद आ जाती है, "मुनाफाखोरी हराम है चिल्लाने वाले उसकी आँखों के सामने फिरने लगें।...सब अपने-अपने मरे जा रहे हैं। उसे ऐसा जान पड़ने लगा, जैसे वह अपने बच्चे की भूख की याद से पूड़ी ठुकरा कर चला आया।"[5] मुनाफाखोरी के फलस्वरुप रामगोपाल को पेट भरने लायक रोटी भी नसीब नहीं होती है, "उस समय उसके अपने हाथ में ही हजारों मन की चाभियों का गुच्छा था। उसने मन में गाली दी...बाज़ार तो ससुर भरा पड़ा है चोर कहीं के दबाये बैठे हैं।"[6] 'महादान' कहानी भी व्यापारियों एवं पूंजीपतियों की कालाबाजारी व मुनाफाखोरी को चरितार्थ करती है। सेठ परसादी लाल मुनाफ़ा कमाने के लिए चावल को गोदामों में भर लेता है। बाज़ार में चावल की कमी होने से लाखों लोग भूख से मरने लगते हैं, "जिस अन्न की एक मुट्ठी के लिए कंकाल समूह त्राहि-त्राहि कर रहा था, वह सेठ जी के कोठों में भरा हुआ और तेजी की प्रतीक्षा कर रहा था।"[7] लोगों के भूख से मरने पर सेठ परसादीलाल दयालुता एवं दानी होने का ढोंग रचते हैं "भुने चने का एक बोरा उनकी कोठी के द्वार पर रख दिया जाता था। दरवान प्रत्येक माँगने वाले को एक मुट्ठी चना देता था।"[8] अतः यशपाल इस कहानी के माध्यम से पूंजीपतियों एवं व्यापारी वर्ग पर व्यंग्य करते है क्योंकि इनके दानी होने के पीछे, निम्न वर्ग का शोषण करना उद्देश्य होता है।

यशपाल जिस समाजवादी विचारधारा को मानते हैं उसी को उन्होंने सामाजिक भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण और आर्थिक भ्रष्टाचार के माध्यम से अपनी कहानियों में चित्रित किया है। यशपाल भ्रष्टाचार जैसी भीषण किन्तु अदृश्य समस्या पर व्यापक रूप में गहराई के साथ विचार करते है और इसके समाधान की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करते है। उनका मानना है जब तक भ्रष्टाचार का अंत नहीं होगा तब तक महंगाई बेरोजगारी व अपराध का अंत नहीं होगा। जितने कम कानून और नियंत्रण होंगे भ्रष्टाचार में उतनी ही कमी आयेगी। ज़्यादा नियंत्रण-ज़्यादा भ्रष्टाचार' के समीकरण को सही ठहराने के लिए तीस के दशक के अमेरिका में की गयी शराब-बंदी का उदाहरण भी दिया जाता है जिसके कारण संगठित और आर्थिक भ्रष्टाचार में अभूतपूर्व उछाल आ गया था। अर्नोल्ड जे. हीदनहाइमर जैसे सिद्धांतकारों का कहना था, "परम्पराबद्ध और सामाजिक रूप से स्थिर समाजों को भ्रष्टाचार की समस्या का कम ही सामना करना पड़ता है। लेकिन तेज़ रफ्तार से होने वाले उद्योगीकरण और आबादी की आवाजाही के कारण समाज स्थापित मानकों और मूल्यों को छोड़ते चले जाते हैं।"[9] परिणाम स्वरूप भ्रष्टाचार की उत्पत्ति होती है।

भ्रष्टाचार के कारण असमानता में वृद्धि होती है। घूस अर्थात् रिश्वत लेना भ्रष्टाचार का सबसे सरल

तरीका है। सामाजिक भ्रष्टाचार का फलक व्यापक है अतः इसमें श्रमिक भ्रष्टाचार के साथ-साथ धार्मिक भ्रष्टाचार समाहित हो जाता है। यशपाल के कहानियों में प्रमुखता से इन्हीं दोनों में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोली गयी है। यशपाल ने अंधविश्वास पर भी खुल कर लिखा है जिसको धार्मिक भ्रष्टाचार के रूप में देखा जा सकता है। यशपाल ने समाज में होने वाले अत्याचारों और अनैतिक आचरणों पर दृढ़ता से कलम चलाया है। इनकी कहानियों के अधिकांश पात्र इन्हीं सामाजिक अत्याचारों और अनैतिक आचरणों की उधेड़-बून में बनते और मिटते हैं। भ्रष्टाचार का दूसरा रुप है शोषण क्योंकि भ्रष्टाचार में मूलतः शोषण की ही प्रवृत्ति होती है। इनकी रचनाओं का एक प्रमुख उद्देश्य सामंती-पूंजीवादी शक्ति को पराजित कर उसके शोषण चक्र से मानव को मुक्ति दिलाना है। वह मानते हैं कि जब तक भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा तब तक व्यक्ति के साथ-साथ समाज और देश का भी स्वस्थ विकास नहीं होगा। यशपाल जैसे जागरूक साहित्यकार ही समाज में व्याप्त हर प्रकार की विकृति का विरोध करते हैं। यशपाल वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से असंतुष्ट नजर आते हैं।

निष्कर्ष- इनकी कहानियों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि भ्रष्टाचार की समस्या मुख्यतः शहरी मध्य वर्गीय जीवन से सम्बंधित है। यही वह वर्ग है जिसे रुपये की लालसा बेचैन किये रहती है। यशपाल को इस जीवन का कटु अनुभव था कदाचित् यही कारण है कि इन्होंने इस प्रकार की परिस्थितियों का बारीकी से विश्लेषण करने में सफलता पायी है। यशपाल का जीवन संक्रमणकालीन जीवन था जिसके कारण इन्होंने अपनी रचनाओं में यथार्थ का चित्रण करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। भ्रष्टाचार युग की सच्चाई है जिसका भयावह रूप इनकी रचनाओं में चित्रित हुआ है। प्रगतिशील विचारक होने के कारण इन्होंने सामाजिक बुराइयों को कभी प्रश्रय नहीं दिया। मार्क्सवादी कथाकार होने के नाते, भ्रष्टाचार के कारण तथा प्रभाव इनके समूचे कथा साहित्य में विद्यमान है। भ्रष्टाचार के प्रति इनका आक्रोश उद्देश्यपूर्ण है क्योंकि हमारे समाज को भ्रष्टाचार ने इस प्रकार विवश कर दिया है कि भविष्य के प्रति मनुष्य के मन में कोई आशा ही शेष नहीं रह गयी है। वह इस सामाजिक व्यवस्था को बदलना चाहते थे। एक प्रकार से भ्रष्टाचार की समस्या सार्वजनिक है जिसका उन्मूलन आवश्यक है इसलिए यशपाल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस दिशा में भरपूर प्रयास किया था।

संदर्भ सूची :

1. यशपाल, वो दुनिया, लोकभारती प्रकाशन, 2010, पृ. सं.-126.
2. यशपाल, तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ (चोरबाजारी के दाम), लोकभारती प्रकाशन, 2010, पृ. सं.-31.
3. यशपाल, धर्मयुद्ध (डॉक्टर), लोकभारती प्रकाशन, 1950, पृ. सं.-119.
4. वही, पृ. सं.-119.
5. यशपाल, अभिशप्त (रोटी का मोल), लोकभारती प्रकाशन, 2010, पृ. सं.-53.
6. वही, पृ. सं.-54.
7. यशपाल, भस्मावृत चिंगारी (महादान), लोकभारती प्रकाशन, 1950, पृ. सं.-32.
8. वही, पृ. सं.-32.
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A4%BE%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0_(%E0%A4%86%E0%A4%9A%E0%A4%B0%E0%A4%A3)

•